

# पाठ 8: रामवृक्ष बेनीपुरी (बालगोबिन भगत)

## 1. लेखक परिचय (Author Introduction)

- लेखक का नाम:** रामवृक्ष बेनीपुरी (इन्हें 'कलम का जादूगर' कहा जाता है)।
- प्रमुख रचनाएँ:** माटी की मूर्तें (रेखाचित्र), पतितों के देश में, चिता के फूल।
- विशेषता:** इनकी भाषा बहुत ही प्रभावशाली, चित्रमय और जादुई है। स्वाधीनता आंदोलन में इनका सक्रिय योगदान रहा।

## 2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

यह पाठ एक **रेखाचित्र (Pen-portrait)** है। इसमें एक ऐसे व्यक्ति 'बालगोबिन भगत' का चरित्र-चित्रण किया गया है, जो गृहस्थ (परिवार वाले) होकर भी असल में एक सच्चे संन्यासी (साधु) थे। वे दिखावे के साधु नहीं थे, बल्कि आचरण (व्यवहार) से साधु थे।

### 3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

**वेशभूषा और आचरण:** बालगोबिन भगत 60 वर्ष से ऊपर के गोरे-चिट्टे आदमी थे। सिर पर कबीरपंथी कनफटी टोपी, गले में तुलसी की माला और माथे पर रामानंदी चंदन लगाते थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे और कबीर को अपना 'साहब' मानते थे। उनके खेत में जो कुछ पैदा होता, वे उसे चार कोस दूर कबीर के दरबार (मठ) में ले जाते और प्रसाद के रूप में जो वापस मिलता, उसी से परिवार चलाते।

**मधुर गायन:** आषाढ़ के महीने में जब गाँव वाले खेतों में धान रोपते, तो भगत जी के मधुर गायन से बच्चे झूम उठते और औरतों के होंठ गुनगुनाने लगते। सर्दियों (कार्तिक) की कड़कड़ाती ठंड में भी उनका गाना सुनकर माथे पर पसीना चमक उठता था।

**पुत्र की मृत्यु:** जब उनके इकलौते, थोड़े सुस्त और कमज़ोर बेटे की मृत्यु हुई, तो वे रोए नहीं। उन्होंने बेटे के शव के पास दीपक जलाकर कबीर के पद गाए और बहू को भी उत्सव मनाने को कहा, क्योंकि उनके अनुसार "आत्मा का परमात्मा से मिलन हो गया था"।

**समाज-सुधार के कार्य:** उन्होंने पुरानी परंपराओं को तोड़ते हुए बेटे की चिता को मुखान्नि (आग) अपनी बहू से दिलवाई। श्राद्ध के बाद बहू के भाई को बुलाकर बहू की दूसरी शादी करने का आदेश दिया।

**मृत्यु:** वे हर साल गंगा स्नान करने जाते थे। बुढ़ापे में भी उनका नेम-व्रत नहीं टूटा। अंत समय में उनका शरीर कमज़ोर हो गया और एक सुबह उनका मधुर गायन सुनाई नहीं दिया—उनकी मृत्यु हो गई।

### 4. मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण (Character Sketches)

- बालगोबिन भगत:** कबीर के सच्चे अनुयायी, मोह-माया से मुक्त, सच्चे संन्यासी, रूढ़ियों (पुरानी मान्यताओं) को तोड़ने वाले समाज-सुधारक, और एक श्रेष्ठ गायक।
- पुत्रवधू (बहू):** बहुत ही सुघड़, समझदार और सेवाभाव वाली स्त्री। वह ससुर को बुढ़ापे में अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी और उनकी सेवा करना चाहती थी।

## 5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

इस पाठ का मूल संदेश यह है कि **संन्यास का आधार बाहरी वेशभूषा (कपड़े) या अनुष्ठान नहीं होता**, बल्कि मनुष्य का आचरण (कर्म) और मोह-माया से मुक्ति ही उसे सच्चा साधु बनाती है। इसके अलावा, पाठ सामाजिक रूढ़ियों (जैसे विधवा विवाह का निषेध, स्त्रियों द्वारा मुखान्नि न देना) का डटकर विरोध करता है।

## 6. महत्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **साहब:** भगत जी कबीरदास को अपना साहब (ईश्वर/मालिक) मानते थे।
- **कबीर का दरबार:** खेत की पैदावार को वे कबीर मठ में ले जाते थे (निस्वार्थ भाव)।
- **पुत्र का स्वभाव:** बेटा थोड़ा बोदा (कमज़ोर/सुस्त) था, इसलिए भगत जी उसे अधिक मानते थे।
- **उत्सव मनाना:** बेटे की मौत पर रोने के बजाय गाना, क्योंकि आत्मा और परमात्मा का मिलन हो गया है।